

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1552

दिनांक 09 दिसम्बर, 2025

जलवायु अनुकूल आम की किस्मों का विकास

1552. श्री परषोत्तमभाई रुपाला:

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार को जानकारी है कि हाल के वर्षों में, आम के चरम मौसम के दौरान समय से पहले हुई बारिश ने आम की कुल उपज को बुरी तरह प्रभावित किया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) सरकार द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के साथ समन्वय में बेमौसमी और जलवायु-अनुकूल आम किस्मों के अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है; और
- (ग) क्या बेमौसमी आम की खेती की तकनीक विकसित करने के लिए कोई समर्पित अनुसंधान केंद्र या पायलट परियोजनाएं स्थापित की गई हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : बेमौसमी वर्षा के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में आम की फसल उपज में उल्लेखनीय रूप से कमी आई है। आम की फसल में समुचित पुष्पण और फल विकास के लिए शुष्क मौसम का होना जरूरी होता है। पुष्पण के दौरान होने वाली वर्षा से परागकों की गतिविधि बाधित होती है जिससे आम की फसल में निम्नस्तरीय फल जमाव को बल मिलता है। उच्च आर्द्रता और नमी परिस्थिति भी *एंथ्रेक्नोज*, चूर्णिल मिल्ड्यू और ब्लॉसम अंगमारी जैसे रोगों को बढ़ाती है जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। अगेती वर्षा के कारण भी नाशीजीवों का संक्रमण बढ़ता है और अनेक स्थानों में पुष्पण आने में देरी भी होती है। वर्षा की तीव्रता, समय और अवधि पर निर्भर करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में नुकसान की सीमा के साथ-साथ प्रभावित किस्म और बेमौसमी तथा अगेती वर्षा के प्रभाव को **अनुबंध-1** में प्रस्तुत किया गया है।

(ख) : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के विभिन्न संस्थान और राज्य कृषि विश्वविद्यालय (SAUs) आम की जलवायु-अनुकूल किस्मों पर कार्य कर रहे हैं। भाकृअनुप-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु ने जलवायु-अनुकूल किस्म के रूप में आम की अर्का उदय किस्म विकसित की है। इस किस्म में बेंगलुरु की परिस्थितियों में जुलाई-अगस्त में फलन आता है। इसके फल मध्यम आकार वाले (200 से 250 ग्राम) होते हैं और साथ ही इसमें गुच्छा धारण करने वाली प्रवृत्ति और बेहतर भंडारण गुणवत्ता (12 से 15 दिन) पाई जाती है। भाकृअनुप-केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ ने जलवायु-अनुकूल किस्म में यथा सीआईएसएच अरुणिका और अवध अभय को विकसित एवं जारी किया है। अवध अभय किस्म तापमान के प्रति सहनशील है और साथ ही यह *एंथ्रेक्नोज* रोग की सहिष्णु है। सीआईएसएच अरुणिका और अवध अभय दोनों किस्मों में भारी वर्षा से सुरक्षित रहते हुए अगस्त में पककर तैयार होती हैं। आम की पछेती परिपक्वता संकर किस्मों यथा पूसा अरुणिमा और पूसा श्रेष्ठा को भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने विकसित किया है। ये दोनों किस्मों में *एंथ्रेक्नोज* रोग और बेमौसमी वर्षा तथा साथ ही जलवायु परिवर्तन से जुड़ी प्रतिकूलताओं के प्रति सहनशील हैं।

(ग) : हालिया अतीत में आंध्र प्रदेश (किस्म रॉयल स्पेशल/पुनासा), तमिल नाडु (किस्म कुरुक्कन एवं नीलम), गोवा एवं गुजरात (किस्म बजरंग) में बहु-सीजन पुष्पण और फलन देने वाली किस्मों की पहचान करने, उनका संकलन व संरक्षण करने हेतु प्रयास किए गए हैं ताकि ऑफ-सीजन (सितम्बर-फरवरी) में किसानों को अच्छा बाजार मूल्य मिल सके। अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह से अनेक बहु-सीजन वाली पुष्पण स्थानीय प्राप्तियों की सूचना मिली है।

राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना (NAIP) भाकृअनुप, नई दिल्ली के सहयोग से “विभिन्न पर्यावरण परिस्थितियों के अंतर्गत आम में बेमौसमी पुष्पण एवं फलन की क्रियाविधि को समझना” विषय पर एक अनुसंधान परियोजना चलाई गई। इसके तहत बेमौसमी उत्पादन के लिए कन्याकुमारी में 10 आशाजनक ऑफ-सीजन क्लोन, 6 व्यावसायिक किस्मों और किसानों द्वारा तैयार की गई 4 किस्मों की भी पहचान की गई। नीलम, कालेपड और तोतापुरी किस्म में कन्याकुमारी में ऑफ-सीजन के दौरान पुष्पण एवं फलन हुआ। कर्नाटक राज्य में आम की तोतापुरी, पुनासा, निरंजन और रॉयल स्पेशल किस्मों में ऑफ-सीजन छिटपुट और विरल पुष्पण की पहचान की गई। कोंकण के पश्चिमी तट की पहचान ऑफ - सीजन पुष्पण के लिए की गई थी और कोंकण क्षेत्र में पैक्लोबुट्राजोल का प्रयोग (15 मई-15 जून) करके आम के सीजन को 2.5 माह आगे बढ़ाने (एडवांसिंग) में सफलता मिली।

राज्य-वर्ष-प्रभाव सुधार प्रारूप

क्र.सं.	राज्य (AICRP केंद्र)	घटना का वर्ष	आम की फसल पर प्रभाव	सुधारात्मक/प्रशमन उपाय
1	बिहार (सबौर)	2020 (फरवरी-मार्च)	व्यावसायिक किस्म लंगडा में 10-13% उपज की कमी, पुष्पन के दौरान ब्लॉसम अंगमारी रोग में बढ़ोतरी	पुष्पण/पुष्पन से पहले कार्बेन्डाजिम + मैकोजेब @ 2 g/l का छिड़काव (10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव)
2	गुजरात (पारिया)	2020-21 से 2024-25	खराब पुष्पण/पुष्पन, कम फल जमाव, पकने से पूर्व फलों का गिरना; बेमौसमी वर्षा एवं चक्रवाती वर्षा के कारण नाशीजीव एवं रोग प्रकोप में बढ़ोतरी	कवकनाशी/नाशकजीवनाशी का समय से छिड़काव; सलाह जारी की गई; गिरे हुए परिपक्व फलों का उपयोग प्रसंस्करण प्रयोजन हेतु
3	झारखंड (रांची)	2025	फल मक्खी संक्रमण, सूटी माउल्ड और फलों में कालापन आने के कारण 12-16% उपज नुकसान (व्यावसायिक किस्म आमपाली)	फलों की थैलाबंदी, फल मक्खी ट्रैप, समुचित कटाई-छंटाई और रीति-पैकेज
4	महाराष्ट्र (वेंगुरले एवं राहुरी)	2023-2025	जनवरी और मई माह में वर्षा, अगती एवं अनियमित वर्षा के कारण कम पुष्पन और उपज नुकसान	कवकनाशियों (हेक्साकोनाजोल, सल्फर) के छिड़काव; किसानों को समय से सलाह
5	मणिपुर (इम्फाल)	वार्षिक (जून-जुलाई)	सूटी माउल्ड और अनाकर्षक फल छिलका का दिखाई देना। हालांकि अधिकांश उपज अप्रभावित बनी रही।	2 ml/l की दर से नीम तेल का और किण्वित चावल जल (जैविक रीति) का छिड़काव
6	तमिल नाडु (पेरियाकुलम)	2023-2025	गंभीर रूप से फलों का गिरना और नाशीजीव/रोग प्रकोप; उपज नुकसान : 32-35% (2023), 75-80% (2024), 46-55% (2025)	पुष्पण/पुष्पन के लिए यूरिया/ KNO_3 का छिड़काव; फलों को बनाए रखने के लिए NAA/ KNO_3 का छिड़काव; पैक्लोबुट्राजोल, कवकनाशी और कीटनाशी के छिड़काव; खेत परामर्श कार्यक्रम
7	तेलंगाना (संगारेड्डी)	पिछले 5 वर्ष	लम्बे समय तक वर्षा होने और जल भराव के कारण 40-50% उपज नुकसान	जल निकासी में सुधार; क्षतिग्रस्त शाखाओं की छंटाई; KNO_3 /यूरिया का छिड़काव; नाशीजीव एवं रोग निगरानी; कवकनाशी का छिड़काव
8	त्रिपुरा (लेम्बूचेरा)	2021-2025	मानसून से पहले होने वाली बूदा-बांदी, आंधी एवं ओलावृष्टि के कारण 10-20% वार्षिक नुकसान	आम की बौनी किस्म (आमपाली); जल निकासी चैनल तैयार करना; हवा के लिए अवरोध एवं बंध तैयार करना
9	उत्तर प्रदेश (लखनऊ)	2023-2025	सोल्जर ब्राउनिंग तथा एंथ्रेक्नोज के कारण 3-6% उपज नुकसान; आंधी के कारण पुष्प गुच्छ नुकसान	फलों में थैलाबंदी (10-25% क्षेत्र); डाईफिनोकोनाजोल @ 0.05% का छिड़काव
10	उत्तराखंड (पंतनगर)	2021-2025	नाशीजीव/रोग दबाव, पुष्प एवं फल नुकसान के कारण गंभीर रूप से प्रभावित बागानों में 10-50% तक उपज में कमी	वायु संचरण (कटाई-छंटाई) में सुधार करना, संक्रमित कूड़ा-करकट को हटाना; जल निकासी बनाए रखना; पर्यावरण अनुकूल छिड़काव करना तथा नियमित रूप से निगरानी करना
